'घुमन्तु जनजातियों में बंजारा जनजातिका सामाजिक एवं अभिक्षेत्रिय अध्ययन'

डॉ. संदीप रुपरावजी मसराम
साहाय्यक प्राध्यापक - भूगोल
वसंतराव नाईक शासकीय कला एवं
समाजविज्ञान संस्था, नागपूर
मोबाईल – ८९८३७१८१३१
ईमेल – sandip.masram84@gmail.com

बीज संज्ञा –

विमुक्त जाती-जमाती, घुमंतू जनजातिया, बंजारा घुमंतू जनजाति I

प्रस्तावना-

भारत यह सामाजिक विविधताओं का देश हैI भारत में सभी समुदाय के लोग अपना जीवन अपने शैली में व्यतीत करते हैI इन सभी समुदायों की जीवन पद्धती, रीतिया, बोलीभाषा एवं सभ्यता भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैI मानव के मुख्य बस्ती के बाहर रहकर जंगलो में या मुख्य मानव बस्ती को लगकर बाजू में जनजातिया अपनी बस्ती बनाते हैI वहा पर उनका स्वतंत्र कानून भी होता I इनमे से कुछ जनजातिया स्थानांतरण करते रहते हैI एक जगह से दूसरी जगह भ्रमण करते हैI उनके साथ संरक्षण तथा उपजीविका के हेतु पशु भी होते I इन जनजातियों को उनके कार्य , भाषा, सभ्यता तथा रहन सहन के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है I विमुक्त तथा घुमंतू जनजातिया प्राचीन भारत से ही एक महत्वपूर्ण सामाजिक हिस्सा I

भारतीय समाज के पैतृक और सामाजिक मानदंडो के अनुसार, कुछ जातीय और जनजातिया जो अपराध और खानाबदोश रवैये पर जि रही थी, उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य में आपराधिक जातियों के रूप में पहचाना गया और आधिकारिक रूप से पंजीकृत किया गया I उनके हरकतों पर पुलिस का नियंत्रक था I उन्हें कुछ सीमित बस्तीयो मे पुलिस की निगरानी में रहने के लिए मजबूर किया गया I आवाजाही और रहने पर सभी प्रतिबंध हटा दिए गये थेI इसलिए, इन जातियों और जनजातियों को स्वतंत्र भारत में विमुक्त के रूप में जाना जाता हैI

ब्रिटिश शासन के शुरुवाती दिनों में १७९३ के विनियमन २६ अधिनियम द्वारा कुछ जनजातियों को सरकारी स्तर पर अपराधियों के रूप में पंजीकृत करने और उनके अनुसार व्यवहार करने की प्रथा का प्रावधान लागू किया गया था I १८६० में भारतीय दंड संहिता लागू हुईI बाद में १८७१ में, आपराधिक जनजाति अधिनियम अधिनियमित किया गया और इस अधिनियम को १९२४ के आपराधिक जनजाति केंद्रीय अधिनियम में बदल दिया गया I ३१ अगस्त १९५२ को इसे समाप्त कर दिया गया और जिन जातियों और जनजातियों को अभी भी आपराधिक जनजाति के रूप में जाना जाता है I उन्हें विमुक्त जाती-जमाती के रूप में जाना जाने लगा I

अध्ययन के उद्देश –

प्रस्तुत संशोधन पत्र के अध्ययन का उद्देश घुमंतू जनजातियोका अध्ययन करना है I घुमंतू जनजातियों में कई सारी जनजातिया आती है I घुमंतू जनजातियों में प्रमुख बंजारा घुमंतू जनजातिका सामाजिक अवं अभिक्षेत्रिय अध्ययन करना इस संशोधन पत्र का प्रमुख उद्देश है I इस संशोधन पत्र के उद्देश निम्नलिखित है-

१ घुमंतू जनजातियों में प्रमुख बंजारा घुमंतू जनजातिका सामाजिक अवं अभिक्षेत्रिय अध्ययन करना I

२ घुमंतू जनजातियों में बंजारा घुमंतू जनजाति को वर्गीकृत करना I

संशोशन विधी –

प्रस्तुत संशोधन पत्र के लिए द्वितीयक जानकारी का उपयोग किया गया है I विभिन्न भौगोलिक एवं सामाजिक क़िताबे, संशोधन पत्र, ऑनलाइन जानकारी, अख़बार तथा इंटरनेट से जानकारी प्राप्त की गई है I घुमंतू जनजातियों में बंजारा घुमंतू जनजाति को वर्गीकृत किया गया है I

कार्यक्षेत्र –

प्रस्तुत संशोधन पत्र में घुमंतू जनजातियों में प्रमुख बंजारा घुमंतू जनजातिका अभिक्षेत्रिय अध्ययन करना तथा बंजारा घुमंतू जनजाति को वर्गीकृत करना है I भारत में महाराष्ट्र राज्य के बंजारा जनजातिको अध्ययन के लिए चुना गया है I पूरे भारत में बंजारा जनजाति बिखरी हुई है I पूर्व महाराष्ट्र के कुछ जिलों में बंजारा जनजातिकी जनसंख्या अधिक है I इस प्रदेश को अध्ययन के लिए चुना गया हैI इस प्रदेश में बंजारा जनजातिका केन्द्रीकरण अधिक दिखता है I इस प्रदेश के सामाजिक जीवन में बंजारा जनजातिका प्रभाव अधिक दिखता है I

विश्लेषण –

भारत में प्राचीन काल से ही बोहोत सारी जनजातिया का अस्तित्व विभिन्न प्रदेशों में है I कुछ जनजातिया विशिष्ट प्रदेश में ही रहती है तथा कुछ जनजातिया स्थानांतरण करते रहती है I एक प्रदेश से दुसरे प्रदेश में स्थानांतरण करने वाले जनजातियों को घुमंतू जनजातिया कहा जाता है I बंजारा यह एक महत्वपूर्ण घुमंतू जनजाति है I पूरे भारत में बंजारा बिखरे हुए है I

भारत के कुछ राज्यों में बंजारा जनजाति अनुसूचित जनजाति में और कुछ राज्यों में गैर अनुसूचित खानाबदोश जनजातिया में आती है I भारत में यह मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु, पंजाब, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और हरियाणा राज्यों में पाए जाते है I पूर्व महाराष्ट्र में बंजारा जनजातिका केन्द्रीकरण हुवा है I विदर्भ एवं मराठवाडा प्रदेश में इनकी जनसंख्या अधिक है I यवतमाल, वाशिम, अकोला, अमरावती, वर्धा, नागपुर जिले तथा इनसे सटे हुए प्रदेश में बंजारा जनजाति की जनसंख्या अधिक है I

बंजारा जनजाति की कई शाखाए है I बंजारा जनजाति को इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है I बंजारा, बंजारी, न्हवी बंजारा, शिंगवाले बंजारा, गोर बंजारा, कचलीवाले बंजारा, लमनी, लम्बाडी, लमन, सुल्केर, मथुरा आदि I स्थल अनुसार इनके रीतिरिवाज, देवता और अंतेष्टि के मध्य कुछ अंतर होता है I इनके मूलस्थान के बारे में निश्चित जानकारी नहीं मिलती लेकिन वे स्वयं को राजपूत वंश के राणा प्रताप के वंशज एवं मानते है I मुघलकाल में यह लोग राजस्थान से दक्षिण की और आये ऐसी धारना है I बंजारा जनजाति को उड़ीसा और बिहार में आदिवासियों के रूप में मान्यता नहीं डी गई I अन्यत्र इन्हें अनुसूचित जनजाति में शामिल किया गया है I महाराष्ट्र में बंजारा जनजाति को घुमंतू तथा विमुक्त जाती का दर्जा दिया गया है I आंध्र प्रदेश में इन्हें सुगाली, दिल्ली में शिरकिवन, राजस्थान और केरल में गवरिया तथा गुजरात में चारण के नाम से जाना जाता है I लोदी वंश के सिकंदरशाह ने १५०२ में घोलपुर पर आक्रमण किया था जिसमे बंजारा का पहला उल्लेख मिलता है I एन एफ कांबलीज ने पहली बार जनजाति पर पत्र १८९६ में प्रकाशित किया उनके अनुसार बंजारा की प्रमुख चार उप-प्रजातिया है I जिनमे मथुरिया, लमान, चारण और धाडी महत्वपूर्ण है I इनमे चारण की संख्या अधिक है I बनजारा एवं लवण याने नमक का लाने - ले जाने का कम करने वाले इस क्रिया से उनको लामानी के नाम से जाना जाता होगा I इनमे राठौड़, परमार (पवार), चौहान और जाधव या मुखिया यह चार कुल शामिल है I

हल्का गोरा एवं सावला रंग, उचा कद, मजबूत एवं कसा हुवा शरीर यह बंजारा लोगों की शारीरिक विशेषताए है I पुरुष धोती या पतलून के साथ अलग किसम की कमीज पहनते है I सर पर लाल रंग की पगड़ी लपेटते है I महिलाए लाल रंग का घागरा और चोली पहनते है I उसपर काशिदाकारीवाली, आइने के तुकडे वाली भड़कीले रंग की चुनरी ओढ़ते I महिलओंको जेवर पहनने की और टैटू की लालसा होती है I वे हात में हाथी दंत, सींग या पीतल के कंगन पहनते है I तथा वे अपनी बाहू पर वाकी पहनते है I यह अलग प्रकारकी चुडिया होती है I

व्यापर उनका मुख्य व्यवसाय है, अद्यपि वे जंगल पहाड़ो में पाए जाने वाले मौलिक पत्थर, गोंद, शहद आदि को इकठ्ठा करते है और बेचते है I बीसवी सदी में, उनमे से कई ने खेती और श्रम करना शुरू कर दिया है I बंजारा गिरोह मजदूरी के लिए शहरो से झुग्गी बस्तियों में जा रहे है I उनमे से कुछ धाडी या भट है और वे संगीत के पारखी होते है I वर्ष के अंत में वे अपने पूर्वजो की स्तुति गीत गाते हुए मौज मस्ती करने के लिए चारणों के बस्ती में जाते है I इसके लिए उन्हें पैसे या बैल के रूप में भुकतान किया जाता है I ये लोग झोपड़ियो में या अपने तंबू में रहते है I कुछ घर साधारण होते है I बंजारा लोगो की बोली अलग होती है I बंजारा लोग 'गोलमाटी' बोली बोलते है I यह बोली राजस्थानी और हिंदी दोनो भाषा से प्रभावित है, लेकीन इसमे राजस्थानी मोड अधिक है I

बंजारा लोगो को अपनी सात पुश्तो की नाम पत्रिका का ज्ञान होना जरुरी है ऐसा मानना है I बंजारा लोगो के बस्ती को तांडा कहते है I हर एक तांडा का एक मुखिया होता है I यह मुखिया का पद उसको विरासत से मिलाता है I मुखिया के सलाह से ही व्यापार किया जाता है I मुखिया उस पूरी बस्ती का न्यायाधीश भी होता है I उनके द्वारा दिया गया न्याय सबको मान्य करना पड़ता I

बंजारा समाज में एक ही कुल में शादी नहीं हो सकती I शादी की विधी साधारण होती है I चारन तथा लमान उपजातियों में लड़कियों की शादी बड़े होने पर कर दी जाती है I लेकिन दक्षिण में लडकियों की शादी कम उम्र में हो जाती है Iबंजरा समाज में भगत का विशेष महत्त्व है I वे चिकित्सा और टोना दोनों का अभ्यास करते है I बंजारा लोक दशहरा, दीवाली, होली और गोकुलअष्टमी यह त्यौहार मुख्य रूप से मनाते है I बंजारा लोग नृत्य और संगीत से प्यार करते है I नगारा, साप अवं मोर नृत्यप्रकार उनमे विशेष रूप से लोकप्रिय है I बंजारा समाज के लोक नृत्य और लोक कथाए प्रसिद्ध है I

निष्कर्ष –

प्रस्तुत संशोधन पत्र के अध्ययन का उद्देश घुमंतू जनजातियोका अध्ययन किया गया है I I घुमंतू जनजातियों में प्रमुख बंजारा घुमंतू जनजातिका सामाजिक एवं अभिक्षेत्रिय अध्ययन किया गया है I बंजारा समाज अपनी सभ्यता को संभाले रखा है I उनकी बोली भाषा, पोशाख, सामूहिक त्यौहार, एकता यह सब गौरवनीय है I पूर्व महाराष्ट्र में बंजारा जनजातिका केन्द्रीकरण हुवा है I विदर्भ एवं मराठवाडा प्रदेश में इनकी जनसंख्या अधिक है I यवतमाल, वाशिम, अकोला, अमरावती, वर्धा, नागपुर जिले तथा इनसे सटे हुए प्रदेश में बंजारा जनजाति की जनसंख्या अधिक है I बंजारा जनजाति को बंजारा, बंजारी, न्हवी बंजारा, शिंगवाले बंजारा, गोर बंजारा, कचलीवाले बंजारा, लमनी, लम्बाडी, लमन, सुल्केर, मथुरा आदि प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है I इनमे राठौड़, परमार (पवार), चौहान और जाधव या मुखिया यह चार कुल है I

यह जनजातिया भारत का अभिन्न हिस्सा है I घुमंतू जनजातियों का इतिहास भारत के इतिहास को दर्शाता है I घुमंतू जनजातियों का लिखित इतिहास बोहोत कम उपलब्ध है I वह निसर्ग को पूजते है I इन घुमंतू जनजातियों की सभ्यता को संभाले रखना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है I

संदर्भ -

1 Fuchs, Stephen, The Aboriginal Tribes of India, Bombay, 1973
2 Government of India, Report of the Backward classes commission, Vol. I, New Delhi, 1982
3 Singh K.S. , People of India, Calcutta, 1992
4 Russell, R.V. Hira Lal, The Tribes and Castes of The Central Provinces of India, Vol. II, Delhi 1975
5 राठोड़ मोतीलाल, बंजारा संस्कृती, औरंगाबा, १९७६
6 प्रा. प्रकाश राठोड़, बंजारा समाज, साहित्य आणि संस्कृती, युगसाक्षी प्रकाशन, नागपूर. २०१३
7 मराठी विश्वकोष